Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हिमाचल प्रदेश की पौराणिक गायन शैलियों का सांगीतिक अध्ययन

YASHWANT

Ph.D. Research Scholar, Performing Arts of Music, Lovely Professional University, Phagwara Punjab

सार

हिमाचल प्रदेश अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, संस्कृति एवं लोक संगीत के लिए विश्व प्रसिद्ध है। देवी-देवताओं की इस पावन भूमि को देव-भूमि के नाम से भी जाना जाता है। लोक संगीत की तीनों कलाएं गायन, वादन एवं नृत्य यहाँ के लोगों के जीवन से जुडी है। हिमाचल प्रदेश के लोग प्रत्येक उत्सव एवं खुशी के अवसर पर मनोरंजन के लिए लोक संगीत की कलाओं को प्राथमिकता देते हैं। हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत एवं लोक गायन शैलियों से यहाँ की झलक मिलती है। हिमाचल प्रदेश में गायन की विभिन्न शैलियां प्रचलित है। लोक गायन की सभी शैलियां वर्तमान समय में भी लोक समाज में प्रचलित है।

मुख्य शब्द: हिमाचल प्रदेश, लामण, कुंजडी मल्हार, बरलाज, नाटी, छिंझ।

भूमिका

हिमाचल प्रदेश 12 जिलों का प्रदेश है, प्रत्येक जिले की अपनी भाषा, रीति-रिवाज संस्कृति है। हिमाचल प्रदेश में गायन की कई शैलियाँ हैं जो प्राचीन समय से ही गाई जाती रही हैं। हिमाचल की पौराणिक गायन शैलियों में नाटी, मुंजरा, झुरी, लामण इत्यादि हैं, जोकि आज भी प्रचार में है। प्रत्येक क्षेत्र के लोगों द्वारा त्यौहारों उत्सवों इत्यादि पर अपने क्षेत्र की गायन शैलियों का गायन, मनोरंजन के लिए किया जाता है। लोगों द्वारा इन गायन शैलियों के साथ लोक नृत्य भी प्रस्तुत किया जाता है। इन पौराणिक गायन शैलियों के साथ पौराणिक, पारम्परिक लोक वाद्यों जैसे ढोलक, ढोल, शहनाई, नगाड़ा, रणसिंघा इत्यादि लोक वाद्यों का वादन किया जाता है। कुल्लु, महासू, सोलन, किन्नौर, लाहौल-स्पिति की गायन शैलियाँ, मण्डी, काँगड़ा, बिलासपुर की गिद्दा गायन शैली सिरमौर व अन्य जिलों की पौराणिक गायन शैली उस जिले की संस्कृति, रीति-रिवाज तथा पहनावे इत्यादि को दर्शाती है। लोक-गीतों के माध्यम से हमें उस क्षेत्र की संस्कृति इत्यादि का ज्ञान हो जाता है।

लामण गायन शैली

लामण गायन शैली हिमाचल की पौराणिक गायन शैली मानी जाती है। लामण गायन शैली हिमाचल के शिमला, कुल्लु, सिरमौर इत्यादि क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय है। इस शैली के गीत द्विपद तथा चतुष्पद में होते हैं। झुरी, गंगी तथा लामण एक ही शैली के विभिन्न नाम है। लामण गायन शैली के गीतों में हंसना-रोना, सुख-दुख, मिलन-विरह, संयोग-वियोग, लोक-परलोक का चित्रण मिलता है। लामण के गीतों में लोक-कार्य का भी वर्णन मिलता है। इसके गायन में लय, टेक इत्यादि का विशेष महत्त्व रहता है। लामण एक अनिबद्ध गायन शैली है। जीवन के प्रत्येक रंग का वर्णन लामण के गीतों में मिलता है। यह शैली काफी लोकप्रिय है जिसका गायन प्राचीन समय से ही किया जाता रहा है। लामण गायन शैली सरल एवं स्वाभाविक होती है। वाद्य यंत्रों का अभाव इसकी मधुरता को कम नहीं करता। लामण प्रेम-प्रसंग तथा वाद-विवाद पर आधारित होते हैं। इस शैली का गायन, फसलों की कटाई के समय, पशु तथा भेड़-बकरियों को चराते समय, विवाह, सांस्कृतिक उत्सवों इत्यादि पर औरतों तथा पुरूषों के द्वारा सवाल-जवाब के रूप में पेश किया जाता है। लामण गीतों में ऐसे शब्दों, छंदों का प्रयोग रहता है जिसमें प्रश्न-उत्तर होते हैं। गायक-गायिका ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर बैठकर इन्हें दोहराते हैं। हिमाचल का जौनसार बाबर क्षेत्र, शिमला का समूचा क्षेत्र तथा सिरमौर लामण गीतों के गढ़ माने जाते हैं। इन क्षेत्रों में लामण का गायन सबसे ज्यादा होता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

कुंजडी-मल्हार गायन शैली

कुंजडी-मल्हार जिला चम्बा की काफी लोकप्रिय गायन शैली है। यह गायन शैली पहले चम्बा जिले तक ही सीमित थी, परन्तु अब कुंजडी-मल्हार शैली को हिमाचल प्रदेश के अन्य जिलों व क्षेत्रों में गाया व सुना जाता है। इस शैली के गीत चम्बयाली भाषा में निबद्ध रहते हैं। कुंजडी-मल्हार में ऋतु गीत, शृंगार गीत, विरह गीत, प्रशंसा गीत होते हैं। मिंजर के दिनों में कुंजडी-मल्हार के गीतों के साथ हारमोनियम, तबला व कंसी का वादन होता है। मिंजर के दिनों में कुंजडी-मल्हार के गीत सभी घरों में गाए जाते हैं। 15 शताब्दी के अंत से ही इसकी शुरूआत हुई। शासक की स्तुति, वर्षा ऋतु में वर्षा होने से जल स्त्रोतों को भरने की खुशी में जो गीत गाए गए उन्हीं ही गीतों को कुंजडी मल्हार गीत कहा गया। मिंजर मेले के दौरान कुंजडी-मल्हार के गीतों को सुनना शुभ माना जाता है। सर्वप्रथम इसका गायन श्रवण श्री लक्ष्मीनारायण जी के मन्दिर में लोक-कलाकारों द्वारा किया जाता है, उसके पश्चात् इसका गायन सांयकाल को मिंजर मेले में किया जाता है। इस शैली के गीतों में विरह के गीत, बरसात के गीत आदि का वर्णन मिलता है। हिमाचल प्रदेश के जिला चम्बा की यह लोकप्रिय व प्रसिद्ध गायन शैली है। चम्बयाली भाषा में बद्ध कुंजडी-मल्हार शैली में सब तरह के गीत विद्यमान रहते हैं। चम्बा जिले की पौराणिक गायन शैलियों में यह शैली अपनी एक अलग पहचान रखती है। प्राचीन समय में कुंजडी-मल्हार लोकगीतों में सारंगी, रणसिंघा, नगाड़ा, घड़ा-थाली, कांसी, तबला, शहनाई आदि का प्रयोग होता था क्योंकि ये हमारे पारम्परिक वाद्य रहे हैं।

बरलाज गायन शैली

बरलाज हिमाचल प्रदेश की पौराणिक गायन शैली है। इसका गायन लगभग हिमाचल के सभी क्षेत्रों में किया जाता है। हिमाचल प्रदेश सोलन जिले में यह आज भी प्रचलित है। बरलाज का आयोजन व गायन दीपावली, एकादश, शरद पूर्णिमा व माल पूर्णिमा आदि पर्व पर होता है। इस शैली में रामायण के पदों को गाकर प्रस्तुत किया जाता है। बरलाज शैली का गायन जंग ताल में धीमी लय में किया जाता है। यह शैली हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्ध शैली है। सोलन जिले में इस शैली को तीन भागों में बांटकर गाते हैं। बरलाज का पहला भाग रमैण कहलाता है, इस भाग में छंद युक्त पदों का गायन लय युक्त होता है। इसका दूसरा भाग रथौल होता है। इस भाग में रमैण से आगे के पदों का गायन किया जाता है। बरलाज में रामचरित मानस के पदों का गायन किया जाता है। बरलाज का तीसरा भाग 'छोड़का' कहलाता है। इस भाग में रथौल के आगे के भाग को ताल व नृत्य के साथ गाया जाता है। बरलाज गायन शैली के साथ हिमाचल के लोक वाद्यों नगाड़ा, करनाल, रणसिंघा, शहनाई, खंजरी, डमरू इत्यादि वाद्यों का वादन किया जाता है। बरलाज गायन शैली के रमैण भाग में सीता हरण के प्रसंगों का गायन किया जाता है, द्वितीय भाग रथौल के एक भाग में सवाल-जवाब चलते हैं। जिसमें दो व्यक्ति होते हैं अन्य व्यक्ति समर्थन के लिए भले ही कहकर उनका समर्थन करते हैं। बरलाज के तृतीय भाग 'छोड़का' को सोलन में थामडू भी कहते हैं। इस भाग में राम जी के वनवास जाने तथा राजा दशरथ के द्वारा वचन मांगने का वर्णन किया गया है।

छिंझ गायन शैली

हिमाचली लोक गायन शैलियों में मण्डयाली छिंझ गीत शैली का अपना ही महत्त्व है। यह शैली जिला मण्डी में काफी लोकप्रिय है। छिंझ गायन शैली को मण्डी की मूल्यवान गीत शैली माना जाता है। प्रत्येक नववर्ष के चैत मास में बसंत ऋतु का आगमन होता है। पेड़-पौधों के अंकुर, कलियाँ फूटने लगती हैं, तो मण्डी जिले का जन-मानस छिंझ गीतों को गा उठता है। छिंझ गीतों को गाना खुशी का प्रतीक माना जाता है। छिंझ के गीतों में नववर्ष का संदेश होता है। महिलाओं के द्वारा समूह में भी इसका गायन किया जाता है, साथ ही एक दूसरे के घर जाकर इस गायन शैली के गीतों का गायन किया जाता है। छिंझ के गीतों में कहीं मातृभाव तो कहीं पति-पत्नी, सास-ससुर, जेठ-जठानी, देवर-देवरानी इत्यादि को आपसी प्रेम की झलक देखने को मिलती है। छिंझ के गीतों में कहीं वाद-विवाद का वर्णन भी मिलता है। छिंझ गायन शैली का प्रारम्भ सेन वंश के राजाओं के काल में हुआ। जिला मण्डी के

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लोक-गीतों में सर्वोत्कृष्ट गीत शैली छिंझ मानी जाती है। बसंत ऋतु के आगमन पर इन गीतों को जिलाभर में सुना जा सकता है। छिंझ गीत का गायन चैत मास में किया जाता है। इस शैली के गीत के बोल मण्डयाली भाषा में ही निबद्ध रहते हैं। इस गायन शैली में स्वर, लय, ताल, रस भाव आदि का विशेष ढंग पाया जाता है। मण्डी जिले की लोकप्रिय गायन शैली छिंझ को ठुमरी के अधिक समीप माना जाता है। छिंझ गीत की पंक्ति को दो-तीन बार दोहराया जाता है। छिंझ गायन शैली हिमाचल की पौराणिक लोक गायन शैली है। इस शैली का गायन प्राचीन समय से ही किया जाता आ रहा है। मण्डी क्षेत्र में यह शैली सर्वाधिक प्रचलित है। छिंझ गायन शैली के साथ चाचर ताल तथा आठ मात्रा के बजन के बराबर की ताल का वादन किया जाता है। इस शैली के गीतों की गति साधारण बिलम्बित रहती है। द्रुत लय में भी छिंझ के गीतों का गायन किया जाता है। छिंझ गायन शैली के गीतों के स्थाई व अन्तरा एक समान ही गाए जाते हैं। इस लोक गायन शैली के साथ लोक वाद्य ढोलक, नगाड़ा, शहनाई आदि का प्रयोग किया जाता है।

नाटी गायन शैली

नाटी शब्द 'नट' नटी से बना है इसका संबंध नाट्य से होता है। हिमाचल प्रदेश के ऊँचाई वाले क्षेत्रों में नाटी शैली का प्रचलन रहा है। नाटी हिमाचल प्रदेश की पौराणिक गायन शैलियों में से एक है। इस शैली का गायन हिमाचल के कई क्षेत्रों में किया जाता है। नाटी ज्यादातर शिमला, कुल्लू, सिरमौर इत्यादि क्षेत्रों में गाई जाती है। प्राचीन समय से ही ये हिमाचल की काफी लोकप्रिय शैली रही है। नाटी पर्वतीय लोगों की अमूल्य संस्कृति है। नाटी गायन शैली को लोगों द्वारा आज भी परम्परागत रूप से सुरक्षित रखा गया है। हिमाचल प्रदेश से बाहर भी नाटी अपनी एक अलग पहचान रखती है। नाटी गीतों में पर्वतीय लोगों के रहन-सहन व दैनिक जीवन का वर्णन होता है। नाटी गायन शैली के साथ पारम्परिक लोक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, जैसे- ढोल, नगाड़ा, रणसिंघा, करनाल, शहनाई, खंजरी इत्यादि प्रमुख हैं। नाटी गायन शैली के तीन प्रकार हैं- ढीली नाटी, मुंजरा नाटी व माला नाटी है। नाटी गायन शैली को द्रुत, मध्य व बिलबिम्त लय में गाया जाता है। लोक गायक गीत के माध्यम से भावों व संस्कृति को प्रकट करता है। इसका गायन प्रायः त्यौहारों, उत्सवों, मेलों व खुशी के अवसर पर किया जाता है। बिना गीतों के गायन व नृत्यों के प्रस्तुतीकरण में कोई भी उत्सव पूर्ण नहीं होता। नाटी गायन शैली में झुरी का गीत, चैंखी का गीत, भागीरथी का गीत काफी प्रसिद्ध हैं। इनका गायन बारह, आठ मात्रा की ताल में किया जाता है। प्राचीन समय में नाटी जितनी अधिक प्रसिद्ध थी, वर्तमान में भी नाटी का वही स्थान समाज में आज भी है। लोगों द्वारा अपने मनोरंजन के लिए नाटी गीतों का गायन किया जाता है एवं नाटी गीतों के साथ, नाटी नृत्य भी किया जाता है।

बिरसु गायन शैली

हिमाचल प्रदेश में अनेकों गायन शैलियाँ प्रचलित है। इन्हीं गायन शैलियों में से बिरसु गायन शैली भी अपना अहम स्थान रखती है। बिरसु हिमाचल की प्राचीन गायन शैली है। इसके गीतों में महासु देवता का गुणगान किया जाता है। बिरसु का अर्थ 'देवता की स्तुति' से लिया जाता है। इस शैली के द्वारा कुल देवता की शक्तियों का बखान किया जाता है। बिरसु का गायन पंचमी उत्सव पर किया जाता है। महासु देवता का गायन ही बिरसु है। इसमें विभिन्न देवी-देवताओं की कहानियों (का गुण गान) को गाकर सुनाया जाता है। बिरसु गायन के दो प्रकार बिरसु हारूल व बिरसु गीत है। जिला सिरमौर में बिरसु की हारूल काफी लोकप्रिय है। बिरसु निबद्ध गायन शैली है, इस शैली के गीत स्थानीय भाषा में होते हैं। बिरसु के गीतों का गायन द्रुत लय में किया जाता है। यह शैली मुख्य तौर पर देवी-देवताओं की स्तुति पर आधारित होती है। इसके गीतों में स्थानीय देवता तथा अन्य देवताओं की शक्तियों का वर्णन किया जाता है। बिरसु एक देव गायन है। हमारी पौराणिक सामाजिक घटनाएं इससे काफी जुड़ी हुई हैं, उन्हीं घटनाओं को जोड़कर बिरसु गीत बना है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ढोलरू गायन शैली

ढोलरू शैली जिला चम्बा की प्राचीन गायन शैली है। ढोलरू शैली में बसंत के गीत होते हैं, जो ढोलक के साथ गाए जाते हैं। इस शैली के गीतों का गायन कुछ लोगों की टोली द्वारा घर-घर जाकर किया जाता था। ढोलरू शैली का गायन दो लोगों या चार, पांच लोगों की टोली द्वारा किया जाता है। इस शैली के साथ लोक वाद्य ढोल वादन किया जाता है। जिला बिलासपुर के ढोलरू के साथ शहनाई भी बजाई जाती है। इस शैली के गीत ग्रीष्मकाल के बाद चैत मास में ही गाए जाते हैं। ढोलरू शैली के साथ चम्बयाली लोकताल का वादन किया जाता है। इस शैली में ईश्वरपोसना के गीत भी विद्यमान रहते हैं। ढोलरू शैली व्यवसाय की जातियों से सम्बंधित हैं। ढोलरू गीत नहीं बल्कि लोक मानस की वह विरासत है जो नववर्ष पर संदेश देती है। ढोलरू गायन शैली में नववर्ष के गीत, बलिदान की गाथाओं से संबंधित गीत भी विद्यमान रहते हैं। इस शैली में प्रेम-प्रसंग से जुड़े गीतों का वर्णन भी मिलता है। ढोलरू गायन शैली हिमाचल प्रदेश की काफी प्रसिद्ध व लोक प्रिय गायन शैली है।

न्हैंणी गायन शैली

न्हैंणी जिला कुल्लू की प्राचीन गायन शैली है। कुल्लू में न्हैंणी गायन की विशेष परम्परा है। जब भी ढीली-नाटी का गायन किया जाता है तो उससे पहले न्हैंणी के बोलों का गायन किया जाता है। न्हैंणी हिमाचल की अनिबद्ध गायन शैली है। तालबद्ध गीतों से पूर्व इस शैली का गायन किया जाता है। यह शैली काफी लोकप्रिय शैली है। इसमें नायक-नायिका संबंधी प्रणय से बंधे बोल होते हैं। यहाँ के लोगों द्वारा काम करते हुए ऊंची आवाज में न्हैंणी के बोलों का गायन किया जाता है। जिला मण्डी में भी इस अनिबद्ध गायन शैली का गायन किया जाता है। मण्डी ज़िले के समूचे जनपद में एकल तथा सामुहिक लोकगीत गायन से पहले न्हैंणी का गायन किया जाता है। न्हैंणी गायन शैली के बोल स्थानीय भाषा में होते हैं।

भौंरू गायन शैली

भौंरू गायन शैली हिमाचल प्रदेश की अनिबद्ध गायन शैली है। यह शैली हिमाचल के माहूनाग क्षेत्र में अधिक लोकप्रिय है। भौंरू गायन शैली में नायक-नायिका के परस्पर सवांद का विवरण मिलता है। इस गायन शैली में सवाल-जवाब का क्रम रहता है। जंगलों, खलियानों, खेतों में कार्य करते हुए ऊंची आवाज़ में गायकों द्वारा इसका गायन किया जाता है। गायक अपने ऊंचे स्वरों में भौंरू गायन से सुनने वालों के मन (चित्त) को आन्नदित करता है। इस क्षेत्र में यह शैली काफी प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त हिमाचल के जिला कुल्लू में भी भौंरू शैली का गायन किया जाता है।

स०गीथडग् गायन शैली

स०गीथडग् गायन शैली जिला किन्नौर की लोकप्रिय शैली है। पौराणिक समय से ही इसका गायन किया जाता रहा है। पौराणिक गीतों में स०गीथडग् गीत प्रसिद्ध है। स०गीथडग् पाण्डवों का गीत है। इस गीत शैली में पाण्डवों व कौरवों के जन्म तथा कौरवों के संख्या में 60 होने का वर्णन है। इस गीत शैली का गायन लम्बा होता है और ब्रह्म मुहूर्त में इसका गायन किया जाता है। इस में नाती ने अपनी बहिन कुन्ती को धोखा दिया है। स०गीथडग् गीत का गायन प्रातः चार बजे किया जाता है। इस शैली का गायन प्रत्येक खुशी के अवसरों, विवाह इत्यादि पर किया जाता है। इस गायन शैली के साथ किन्नौरी लोक वाद्यों का वादन किया जाता है। स०गीथडग् गायन शैली किन्नौर की पौराणिक गायन शैलियों में से एक है।

उख्याङ् (फुल्याच) गायन शैली

उख्याङ् गायन शैली किन्नौर की प्रसिद्ध गायन शैली है। इस शैली में गाए जाने वाले गीत फुलों तथा पितरों से संबंधित होते हैं। इन लम्बे गीतों को 'गितकारेङ् गीथडग्' अर्थात गायकों के गीत कहा जाता है। केवल चुने हुए व्यक्ति ही इन गीतों को गाते हैं। उख्याङ् गीतों का गायन घर के अंदर व गाँव के बीच में नहीं किया जाता। विश्वास है कि इसके गायन से पितर इक्ट्ठे हो जाते हैं और उन्हें भेंट

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

देनी पड़ती है। चगांव, उरनी, भुला तथा मीरू आदि गांवों में प्राचीन काल से ही फुल्याच इक्ट्ठा मनाया जाता है। उख्याङ् के गीत की यह भी विशेषता है कि गांव में कब यह मेला मनाए जाने की प्रथा है उख्याङ् के गीत में इसको गाया जाता है। उख्याङ् शैली के गीतों का गायन केवल मन्दिरों में उख्याङ् उत्सव पर किया जाता है।

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत विविधता लिए हुए है। हिमाचल प्रदेश मे कुल 12 जिले हैं और प्रत्येक जिले की संस्कृति एवं लोक संगीत एक दुसरे से भिन्न है। यहाँ पर लोक गायन की अनेकों शैलियां प्रचलित है। हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जिले की भिन्न-भिन्न गायन शैलियां है जोकि उस क्षेत्र की लोक संस्कृति को दर्शाती है। हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत इसी भिन्नता के साथ विश्वभर में प्रसिद्ध है। इन सभी पौराणिक गायन शैलियों के साथ पारम्परिक लोक वाद्यों का वादन लोक कलाकारों द्वारा किया जाता है। हिमाचल प्रदेश की पौराणिक गायन शैलियां अपने वास्तविक रूप में ही जनमानस में विद्यमान है। इनका गायन पारम्परिक तरीके से ही किया जाता है। हिमाचल प्रदेश मे प्रत्येक उत्सव एवं खुशी के अवसर पर लोक गायन शैलियों का गायन किया जाता है।

सन्दर्भ

गोपाल शर्मा, शिलाई क्षेत्र के बिरसु गायन का सांगीतिक अध्ययन, वर्ष 2013-2014, डॉ. जीतराम शर्मा।
कृष्ण चन्द, जिला शिमला के डोडरा कवार क्षेत्र के लोक संगीत का सांगीतिक अध्ययन, वर्ष 2002, डॉ. जीतराम शर्मा।
रचना, हिमाचली तथा हरियाणवी नृत्य गीतों का तुलनात्मक अध्ययन: एक सांगीतिक अध्ययन, वर्ष 2012
गोपाल कृष्ण, शिमला जिले के लोक संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, वर्ष 1992, चमन लाल वर्मा।
प्रेम लाल, सोलन क्षेत्र की धार्मिक मान्यताओं में संगीत एक अध्ययन, वर्ष 2000, रामश्वरूप शांडिल्य।
सरीता शर्मा, चंबा जनपद में कुजंडी मल्हार गायन परम्परा एक अध्ययन, वर्ष 2002-2003, पी. एन. बंसल।
उर्मिला देवी, चंबा की लोक गाथाओं पर आधारित लोकगीत, वर्ष 1991, एन. गर्ग।
रोहित कुमार, जिला शिमला के लोक संगीत पर सीमावर्ती क्षेत्रों का प्रभाव: एक तुलनात्मक अध्ययन, वर्ष 2010, रामश्वरूप शांडिल्य।